

on 16.03.2020. If the benefits of the reduction in the crude oil prices are passed on to ultimate consumers, they will reap the benefits. Entire sector will realise the benefits. The common people are entitled to reap the benefits of the reduction of international crude oil prices. This will give enormous support to common people and boost economic growth. People, who are already suffering due to economic slowdown, are worried about the Government's decision not to pass on the benefits accruing due to drastic reduction in the international crude oil prices. The Government, instead of allowing the consumers to reap benefits in a big way, has reduced the prices of petrol and diesel by a few paise. It is not fair on the part of the Government to deny the consumers the benefits of reduction in international crude oil and absorbing the entire benefit by increasing the central excise rate. It is right time to rescind the notification issued by the Ministry of Finance and fix the prices of petrol and diesel according to the reducing international crude oil prices. Thank you.

SHRI ELAMARAM KAREEM (Kerala): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI K.K. RAGESH (Kerala): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

DR. SASMIT PATRA (Odisha): Sir, I too associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI BHASKAR RAO NEKKANTI (Odisha): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI B. LINGAIAH YADAV (Telangana): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SHRI M. SHANMUGAM (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the issue raised by the hon. Member.

**Need for better facilities at AIIMS, Patna to accommodate  
increasing number of patients**

श्रीमती कहकशां परवीन (बिहार): समापति माहेदय, बहुत-बहुत शुक्रिया। मैं एक बहुत ही गम्भीर मुद्दे को सदन में रखना चाहती हूँ। किसी भी समाज का निर्माण वहाँ के स्वास्थ्य

और शिक्षा पर निर्भर करता है। जब हम स्वस्थ होंगे, तभी हमारा समाज भी स्वस्थ होगा। लेकिन आज समाज में रोगियों की संख्या बढ़ती जा रही है और भारत सरकार ने रोगियों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए 'एम्स' पर रोगियों के इलाज का जो दबाव बढ़ रहा था, उसके मद्देनज़र पटना, मध्य प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड में 'एम्स' खोले हैं। लेकिन उनमें जो संकयी सदस्य हैं, जितनी उनकी स्वीकृति दी गई थी, उसके अनुरूप नहीं हैं और गैर-संकायी सदस्य भी नहीं हैं। बिहार से जो इतने ज्यादा लोग इलाज के लिए यहां एम्स में आते हैं, वहां लम्बी लाइनें लगी रहती हैं और उनका इलाज सही से हो नहीं पाता है। उन्हें यहां अपने लिए किराये पर घर भी लेना पड़ता है। वे लोग अपनी जगह-जमीन भी बेचे देते हैं, लेकिन फिर भी उनका इलाज नहीं हो पाता है और कहीं न कहीं वे अपनी जिन्दगी के आखिरी वक्त तक यहां लड़ते रहते हैं।

महोदय, पटना में जो एम्स खोला गया है, उसमें सही व्यवस्था नहीं रहने के कारण लोग दिल्ली एम्स में आकर अपना इलाज कराते हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संबंधी जो स्टैंडिंग कमेटी है, उसने 2018 में अपनी जो रिपोर्ट पेश की थी, उसमें उसने बहुत सारी कमियों को उजागर किया था और उसकी व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए कहा गया था, लेकिन अभी तक वहां की व्यवस्था सुदृढ़ नहीं हो पायी है।

मैं आपके माध्यम से अनुरोध करना चाहती हूँ कि वहां जो कमियां हैं, उन कमियों को पूरा किया जाए, ताकि दिल्ली में जो एम्स है, उस पर ज्यादा दबाव नहीं पड़े, बल्कि वहां के जो लोग हैं, वे पटना एम्स में ही अपना इलाज करा पायें। बहुत-बहुत शुक्रिया।

†محترمہ کہکشان پروین (بہار) : سبھا پی پی مہودے، بہت بہت شکریہ۔ میں ایک بہت ہی گمبھی مدّے کو سدن میں رکھنا چاہتی ہوں۔ کسری بھی سماج کا نرمٰان وہاں کے سواستھ اور شکشا پر نہیہر کرتا ہے۔ جب ہم سوستھ ہوں گے، تبھی ہمارا سماج بھی سوستھ ہوگا۔ لیکن آج سماج میں مرضوں کی تعداد بڑھتی جا رہی ہے اور بھارت سرکار نے مرضوں کی بڑھتی ہوئی تعداد کو دیکھتے ہوئے 'ایمس' پر مرضوں کے علاج کا جو دباؤ بڑھ رہا تھا، اس کے مدنظر پشہ، مدھتی پردیش، اوڈیشہ، چھش گڑھ، اتراکھنڈ میں 'ایمس' کھولے دی۔ لیکن ان میں جو متاثر سدسنے دی، جنری ان کی منظوری دی گئی تھی، اس کے انوروپ نہی دی۔ اور غی-متاثرہ سدسنے بھی نہی دی۔ اتنے زلّادہ

پٹنہ سے، بہار سے جو لوگ علاج کے لئے ایس آتے ہیں، وہاں لمبی لائن لگی رہتی ہے اور ان کا علاج صحیح سے نہیں ہو پاتا ہے۔ انہی اپنا گھر کرائے پر بھی لیا پڑتا ہے۔ وہ لوگ اپنی جگہ زمین بھی بیچ دیتے ہیں، لیکن پھر بھی علاج نہیں ہو پاتا ہے اور کمی نہ کمی وہ زندگی کے آخری وقت تک یہاں لڑتے رہتے ہیں۔

مہودے، پٹنہ میں جو ایس کھولا گیا ہے، اس میں صحیح انتظام نہیں رہنے کی وجہ سے لوگ دہلی ایس میں آکر اپنا علاج کرائے میں اور پریشان و کلین سے سمبندھت جو اسٹینڈنگ کمیٹی ہے، اس نے اپنی رپورٹ 2018 میں جو پیش کی تھی، اس میں بہت ساری کمزوریوں کو اس نے اجاگر کیا تھا اور اس کی ویسٹھا کو مستحکم کرنے کے لئے کہا گیا تھا، لیکن ابھی تک وہاں ویسٹھا مستحکم نہیں ہو پائی ہے۔ میں آپ کے مادھت سے انورودھ کرنا چاہتی ہوں کہ وہاں جو کمٹوں ہیں، ان کمٹوں کو پورا کیا جائے تاکہ جو ایس دہلی میں ہے، اس پر زلہ دباؤ نہیں پڑے، بلکہ لوگ جو ہیں، وہ پٹنہ ایس میں ہی اپنا علاج کرا پائیں۔ بہت بہت شکریہ۔

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को माननीय सदस्या द्वारा उठाये गये विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्या द्वारा उठाये गये विषय से सम्बद्ध करती हूँ।

श्री जावेद अली खान (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी स्वयं को माननीय सदस्या द्वारा उठाये गये विषय से सम्बद्ध करता हूँ।

✽ جناب جاوید علی خان (اثر پردیش): مہودے، میں بھی خود کو مائے سدسے کے ذریعے اٹھائے گئے موضوع سے سمبندھ کرتا ہوں۔

#### Need to define statutory commitments of Government Employees

श्री रवि प्रकाश वर्मा (उत्तर प्रदेश): महोदय, संविधान के प्रति सम्मान और समर्पण का भाव राष्ट्रियता की पहचान है। सरकारी मशीनरी से निष्पक्षता एवं संवैधानिक प्रतिबद्धताओं की अपेक्षाएं की जाती हैं, परन्तु अब उनकी कार्यक्षमता तथा विश्वसनीयता लगातार गिर रही है।